अध्याय–9

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र इलाहाबाद

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के अधीन एक उन्नत केन्द्र के रूप में अक्टूबर,1992 में स्थापित किया गया था। वर्तमान में, यह वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की एक शाखा है। इस केन्द्र का उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी बिहार और उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन के क्षेत्र में व्यावसायिक विशिष्टता का पोषण एवं संवर्धन करना है।

वर्ष 2004–2005 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1: पूर्वी उत्तर प्रदेश में बुकानेनिया लेंजन के कृत्रिम पुनर्जनन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास [एफ.आर.आई–141/सी.एस.एफ.ई.आर.–02]

उपलब्धियां : विभिन्न वन प्रभागों से पहचान किए गए कैन्डिडेट धन वृक्षों के बीज एकत्र किए और पडिला में सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुर्नस्थापन केन्द्र की अनुसंधान पौधशाला में बोया गया। यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में पॉलीबैगों साथ ही साथ पौधशाला क्यारियों में विभिन्न बुआई पूर्व उपचारों, 24 घन्टे के लिए शीत जल, 48 घण्टे के लिए शीत जल, 12 घण्टे के लिए गरम जल, 10 मिनट के लिए सान्द्रित एसिड, बी.जी.ए., वी.ए.एम. और छाया/धूप के उपयोग किए गए।

सभी उपचारों में से, 24 घण्टे के लिए शीत जल के साथ उपचारित बीजों और ब्लू ग्रीन एल्गी ने अन्य की अपेक्षा बेहतर प्रदर्शन किया। यह भी देखा गया कि धूप में रखे पौधों की अपेक्षा प्राकृतिक छाया में रखे पौधों ने बेहतर प्रदर्शन किया। अध्ययन के दौरान यह अभिलिखित किया गया कि नियंत्रण, जिसमें कोई संयोजन शामिल नहीं था, की अपेक्षा सभी उपचारों के अंकुरण समय घटा तथा अंकुरण प्रतिशत बढ़ा।

परियोजना 2: पूर्वी उत्तर प्रदेश में लोगों के अनुकूल वानिकी कार्यक्रमों में सामाजिक आर्थिक दबावों का अध्ययन करना [एफ.आर.आई.–253/सी.एस.एफ.ई.आर.–04]

उपलब्धियां : प्रतिनिधि जिलों यथा– इलाहाबाद, वाराणसी, बलिया, गोरखपुर और गोंडा का चयन किया गया। राज्य वन कर्मचारियों के साथ परामर्श के बाद सर्वेक्षण के लिए प्रश्नावलियां भी तैयार की गई। पांच प्रतिनिधि जिलों के चयनित क्षेत्रों में सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण पूरा किया गया। सर्वेक्षण के दौरान कुल 5000 प्रविष्टियां, यथा– प्रत्येक जिले में 1000, की गई। वानिकी/कृषि वानिकी अपनाने में दबावों एवं समस्याओं के बारे में लोगों की धारणा का अध्ययन करने के लिए आँकड़ों का विश्लेषण प्रगति पर है।

वर्ष 2004–2005 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1: इलाहाबाद जिले के विन्ध्य रेंज में सूक्ष्म जीवी प्रौद्योगिकी द्वारा सिलिका खनन भूभागों का पुनवनस्पतिकरण [एफ.आर.आई–141/सी.एस.एफ.ई.आर.–01]

स्थिति : अंकुरण और वृद्धि व्यवहार पर विभिन्न जैव–उर्वरक संयोजनों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए चयनित प्रजातियों, उदा.– ऐकेशिया निलोटिका, ऐकेशिया कटैचू, ब्युटीया मोनोस्पर्मा और पोंगेमिया पिन्नाटा के पौधशाला परीक्षण किए गए। प्रयुक्त जैव उर्वरक थे : ऐजोटोबेक्टर, राइजोबियम, फॉस्फेट विलेयक जीवाणु, ब्लू ग्रीन एल्गी और वी.ए.एम.।

यह देखा गया कि अन्य उपचारों की तुलना में चयनित प्रजातियों पर वी.ए.एम. के प्रभाव उल्लेखनीय हैं। पौधशाला परीक्षण परिणामों ने भी दर्शाया कि नियंत्रण की तुलना में विभिन्न जैवउर्वरक संयोजनों के साथ उपचारित बीजों में अंकुरण समय

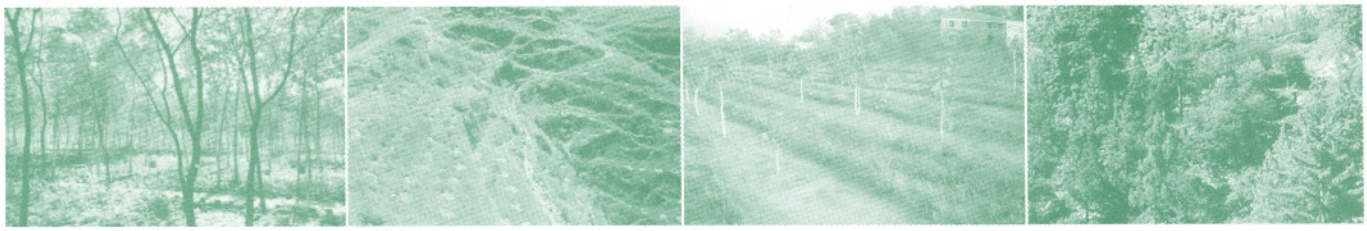

भी घटा। इस पौधशाला परीक्षण के लिए रखरखाव, प्रबन्ध और निराई संक्रियाएं भी की गई। उत्तरजीविता और अधिक वृद्धि प्रदर्शन का अध्ययन करने के लिए शंकरगढ़, इलाहाबाद के सिलिका खनन भूभाग में इन संरोपित पौधों के क्षेत्र परीक्षण तैयार किए गए।

परियोजना 2: स्थानीय लोगों में जागरूकता सृजन के लिए औषधीय पादप पौधशाला का विकास करना [एफ.आर.आई–254 / सी.एस.एफ.ई.आर.–05]

स्थिति : पूर्वी उत्तर प्रदेश में औषधीय प्रजातियों के स्तर के लिए साहित्य सर्वेक्षण किया गया। सामाजिक और साहित्य अध्ययनों के सह संबंध के बाद, जननद्रव्य संग्रहण के लिए 12 प्रजातियों की जांच की गई।

अनुसंधान पौधशाला के शाकीय उद्यान में रोपित प्रजातियां हैं; एस्पेरेगस रेसीमोसस (सतावर), विनका रोजीया (सदाबहार), टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया (गिलोय), क्लोरोफाइटम अरून्डिनेसीयम (सफेद मूसली), बेकोपा मुनीरी (ब्राह्मी), रावोल्फिया सर्पेन्टाइना (सर्पगंधा), बार्लेरिया प्रिओनिटीस (कालाबांस), प्लेन्टेगो ओवाय (इसबगोल), प्लम्बेगो जीलेनिका (चित्रक), होस्कीमस नाइगर (अजवाइन), पाइपर लांगम (पिपली) और ओसिमम सेंक्टम (तुलसी)। इन प्रजातियों का रखरखाव और प्रबन्ध प्रगति पर है।

परियोजना 3: जट्रोफा का अनुसंधान एवं विकास।

स्थिति : चयनित क्षेत्रों में जट्रोफा के कैन्डिडेट धन वृक्षों को चिह्नित किया गय। विभिन्न उद्गमस्थल के बीज चयनित स्रोतों से एकत्रित / प्राप्त किए। अंकुरण और उत्तरजीविता पैरामीटरों का अध्ययन करने के लिए पौधशाला में उद्गमस्थल परीक्षण पर एक प्रयोग स्थापित किया गया। बीजों का अंकुरण 60–80 प्रतिशत था।

जट्रोफा रोपणों के अधिक विस्तार के लिए जट्रोफा के अनुसंधान एवं विकास पर प्रशिक्षकों एवं किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। सहभागियों को पौधशाला से संबंधित तकनीकों, रोपणों विधियों, क्षेत्र प्रदर्शन, विभिन्न उपयोग और इसके जैव–डीजल उपयोग के बारे में जानकारी दी गई।

वर्ष 2004–2005 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

कोई नहीं

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2004–2005 के दौरान पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2004–2005 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2004–2005 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाओं की संख्या
उत्तर प्रदेश	02	03	कोई नहीं

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

1. जट्रोफा के अनुसंधान एवं विकास पर 4 और 5 मार्च, 2005 को नोबोड परियोजना के तहत प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण।
2. जट्रोफा के अनुसंधान एवं विकास पर 15 से 18 तक तथा 22 और 23 मार्च, 2005 को नोबोड परियोजना के अन्तर्गत किसानों के लिए तीन प्रशिक्षण।

कार्यशाला में सहभागिता

1. श्री वी.के सिंह ने 29 दिसम्बर, 2004 को उत्तर प्रदेश वन विभाग, वाराणसी में कृषि वानिकी पर कार्यशाला में भाग लिया।